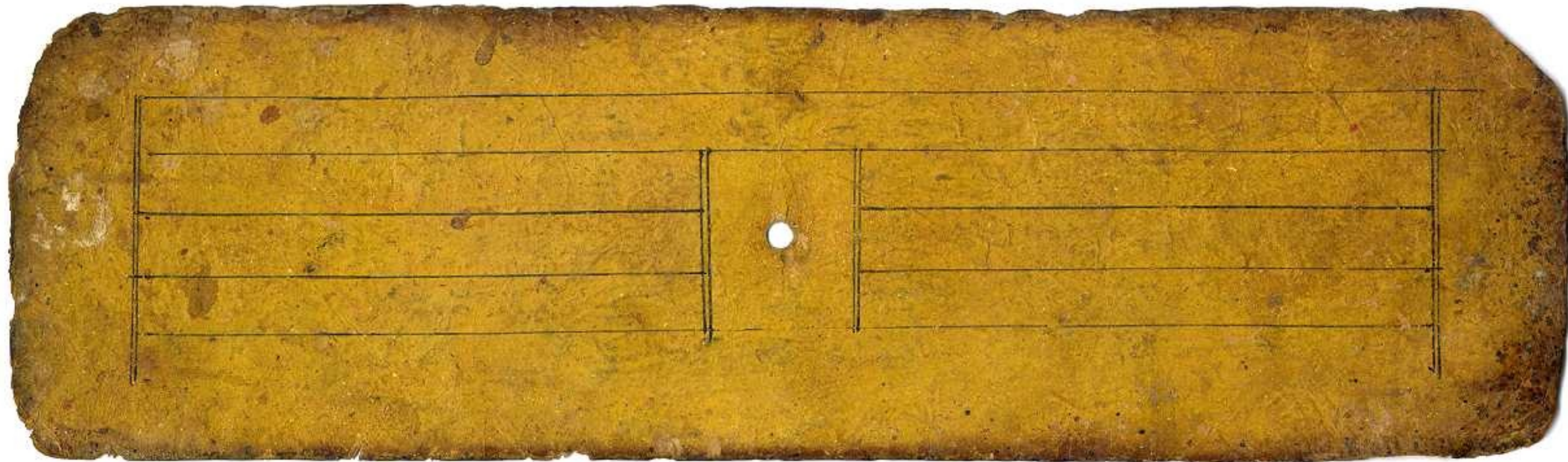




८६ नमो ह्यी वज्रसत्ताया ॥ यमिष्टयदवमाकलाधियमिना वरं कला ॥ यमाधियमयमवनायधमं वा ॥	
धो ॥ किमसाधि ॥ लावनाहवयाया ॥ कथसाधि	वायनयायाहवया ॥ मंमं वयद्विहानया ॥
या ॥ किमनवाय ॥ ॥ यश्च दशविधिजि	यायायकि ॥ यमिनादिकं युमिष्टयक्रया ॥ वि
वादविवायायमयमिमाथायनयाया ॥ नकरंथा	निसंसाधनकि ॥ यायादहा ॥ कलायमममानश
हाकानथायायायवदवसी ॥ वदकायवदवसी ॥ सानाकि ॥ यानहाधिनयाया ॥ शुचनावावमाहिन्नवाधि	

विहोलाकयदानवयारिनिमिदवमावीरुनिमिदवदवमायवमार्यं सवेकथागमानयाययका ॥ दवया	
धियमिचयं आत्तायववकयथाकमंदददडि	यद्व ॥ वाहडका ॥ वद्वयनेव वंवी ॥ वंजयधिसिह
का ॥ ॥ यविकदवमिजववा ॥ कलाह	आदिनं ॥ ॥ लावना ॥ मकहयविद्वंम
मिष्टादिकं अटिनिष्टयमाधिमार्कषहद्विज	निष्टन्नकविष्टमानदवमाकारविचित्र्या ॥ क
थागमायं ॥ सलावं कला ॥ कयमिदं यमं ॥ कथागमजिस्वावं ॥ निस्सलावमिदं कला ॥ पुनयागाययाव	

शुद्धि कवर्धकत्वा ॥ नरुसि सवर्धन थगना वृद्धा ॥ यं वा यदा वयुजा लाघा यं वा दन युनि ॥ यन धिय यया ॥	वगा ४००० वद कना वा म ज्ञानि शुं कठुं मरु
॥ स्व आयि सवर्धन वद वा धि मत्वा धि मः	का ॥ वं ॥ दका वं रु वया ॥ दय का यनि मा स
ये शा धन वका कृ म म डा व प्रा का म या द व लं ॥	उ व ज या ग को ४ ॥ उ व ज शू क वं शा उ व ज वं गः
मि र्णा रु या व मा धन या य ॥ उ व ज कं ग ज रु ॥	
दा ॥ ॥ या आदि नि र्वा ड न ॥ यन सिध वा रु गिं ला रु आदि न स्नान या य ॥ उ न म ४ स म रु व द नो स	

म ४५५

आ धि नि वि शु द्धा नां सर्वे वि प्र रु व रु हं २ रु ह स्वा रु ॥ ध नि य द यं ज्ञा य म रु वा व रु न धि या व डा य या य वा	मु नि व य न ॥ उ व ज स त्व हं वं ॥ ध म रु न रु
व १०८ ॥ यं वा यदा वयुजा लाघा यं वा दन	य क यं थ प ल्यं इ ना रु व ॥ ध न व रु डा रु य
धि यान या य रु वा ॥ उ व ज वं ग रु शा व रु न धि	का मि क म व जी रु व रु यं वा दा व ॥ स्नान व रु
म रु रु न का य मि रुं रु य ॥ ॥ ध न नि व	
य वा ॥ रु व ना ॥ व रु रु ग रु रु व गि लि य रु द य म मा य रु ॥ अ रु द न व रु य रु ॥ ध न नि व नि वि य वा	

नमः स्यं ह्यनानि कं वद न य विना न न ह्यनाना नृ नं र या वि का वा ॥ थन य वि वा नि न य का या या ॥ डं व द	या च ऊ र्ध्व मा ॥ थन रु रु व का या च क र द ह
व जि की ॥ ४ ॥ थम नु न धा र १०८ जा य ३	या ॥ थन य र क न आ र व र वृ आ र वा र क
न स स लि क था य द क ना म र य मि र व ह	थि र य वि धि रु या ॥ ॥ ४ ॥ १०८ ॥
स ना क र यि स उ न या य ॥ ॥ थ वि य	
न ना थ म व द स त रु र य ॥ क म व डी अ मा य सि दि रु र यं चान ॥ डं व द धु क ह ॥ थम रु व ना ॥	

४

डं व द उ न ह ॥ डं व द व जि की र व ह ॥ थन क म व जि न ॥ डं दी र्धं ह द्या कृ मि व द य वृ म द वि रु धि न व द	थ व मि र्वा नां क म व डी य मि र्वा नां व उ म य
उ क व र हं ॥ ४ ॥ थ गु रि म नु गु व न य र वा व	डं व द ह वि म डि मि र्वा नी क रु डं आ ॥ ४ ॥
का र यं स य थ य स नं मा य उ या ॥ ॥	म व का दि वा ॥ डं व द या चान ग ना म व ध मा ॥ ४ ॥
अ ४ ॥ थ म नु न म न का अ धि वा न या या	
य र स वा न ग ॥ ना म व ध मा ॥ ४ ॥ थ रु न न या वि द्या ४ म व ध मा ॥ ४ ॥ डं व द ॥ ४ ॥ थ म नु न य र यं म व का दि व	

धनदात्रं रुद्रासनं सिद्धयस्तुवाहय	डाक्षस्तुवाहय चिक्याव	रावनाय वयः । मनाहं कुं आंजीयं
काचकुं निमग्नगननिथेनाविबवज्ज		हं वंहा सिनिवनिर्न यमवाष्टिकायां स्वस्व
दिक्रुगथागनसंगुदरुनक्षयक्षुगथागन		ह्लावदवीनिचंजनधर्ममाकाव नथागनहः
दयवृहं कायादिकं सुतुवचनानिथेनानि		ह्लावदवीनिचंजनधर्ममाकाव नथागनहः
दृष्ट्वा ॥ धमनुनमदकाकास्य आवाधनयाय ॥	धगुविर्मनु यवयाव ॥	उं आ ११ गधुन वज सुगुमयु

३

युयुधमहामधुलसुगुनाय हं ॥	उं आ ११ वज सुगुमयु	युयुधमहामधुलसुगुनाय हं ॥
जसुगुमयुयुधमहामधुलसुगुनाय हं ॥		उं आ ११ वज सुगुमयु
उनाय हं ॥ उं आ ११ वज सुगुमयु		युयुधमहामधुलसुगुनाय हं ॥
रुयमानं वज सुगुनाय हं ॥		उं आ ११ वज सुगुमयु
जा नान्नायं थावादन सुनि सनाकच ॥	धनो विज वमिखा	स्ववमिखानां वधुसुय कावयं यमनां सिधया

गार्डिनं विनतमदि नंदवमागधनो विरुवा ॥ थनश्रावायेन धुययायायथादिमवेवद्वानां रुयिक सं	दाहो ॥ समवाहं वंदुमावद्वानां रुयिक सं
युनिविना ॥ मायादद्यायथेकश्रावद्वानां रुयिक सं	यागदं सिध्दानां मनकां यायसत्ता वेमिनिद
सिमा ॥ अमवाहं महावदिदवमानां कल्य	मधिवानकुरुमहथशा अश्रममरु वंदुलं स
रुना महावज मधुच युवमया मिमद्वानं	रुनादि विनं चम अवेवका रुविद्या मिवा विचि न कय न क कथागका क थायनि ममानानां मसय अश्रम

१

दिवसो ह्य जहामहननर ॥ सीनियाना रुवद्वानां रुयिक सं	॥ यायादिनि
नां रुन यरिया निन युजायाया ॥ स्वद्विजरायि	रिहानसत्तमाश्रया ॥ डं वजा कृष्णादिमजा ॥
द्वं वं ॥ १ ॥ समयत्तममयमदं रुव ॥ थनगुरु	नजाययायमनुथा ॥ डं वजज रुद ॥ धार ३ रुव
मागाथा ॥ थनआजमानन मधुचमस्तानन	नका ॥ गाथाधयवया ॥ समवाहं वंदुमावद्वानां
अलयादि कर्मसिमा ॥ अमवाहं महावदिदवमानां मधुच कल्ययागदं ॥ सिध्दानां मनकां यायसत्ता	

शायः यज्जायमाचक्षीः सर्वचिकामासकृत् लाशवदुःखालियुद्धमस्तु यचमभ्वलीयचमस्वर्चः सफलिहृत्कमसद्यायकं कृत् जडस इह शायकृत् मय्य आकृत् गमाय	यात्रुः चि चोक् मिहमि मवतल यमिद्यायहमा
--	--

2668

एतत्तिलोपायः। वैदिकः।

लुं नमाजीवकसत्वाय॥ गनकसथकयः यज्जायायथासमवधिजकः गंक्रसः सधुन कनसः नागायाः सर्गधनिः वलियागच्छिथुनिथायनायायः नकसः लिवायः गुनूमधुल्य केराव्यखधमः सिधुनः समाधि॥ थन नाननकनः लंजागनवधुनं ऊविम्व सननिः संख्यकद्वंशीरुगः वज्रयाकालः वज्रयंजलः वज्रमलकालः विमानमधश्च	किलनखवनाः खानकया॥ साटिकिमु वज्रस्त्रिं कालकिलमकल। द्वजव
---	---

कलइःसदकालःविश्वकलिसमयिःरुमिविरावःगन्धधुसटिर्तिःवज्रसल्लनूया	नामावज्रकगोविन्धःवज्रसुनयः
मायनावृष्टःवैलाकुविजयायनः	द्वयननिकम्यःकुष्मानकल्याणाःनम
रैजवःकालिनायाःआलीइचनम	निखिलजःविष्णुवद्यानिःनीलपीनः
वज्रलामविमंचयःकवचयानिवः	हरीगःमलसवागनूयावृगवकुगुयाइधुलकठःलालजिःकाःपुतिमखःसकु

गालःवकवकुलःविनगुंःसमाडाललाटलःयश्चकयालःगालविनःगालदधववृथी	नाःवाद्युचमावनाःनीलानकवचयी
लसिगःषष्ठीरुषमःसमस्तुमदव	दिःतागनाजाःवृगमंठलाःवज्रवज्रध
गार्डःकलकयिलकुंगत्रःठकका	द्वयंलर्मःकनिष्ठिकाद्वयःशंखलि
मावितकनायाःवज्रमृष्टिद्वयःपृष्ट	गंगागङ्गनिद्वयःपृष्टगुलाकाविजयमदयाःखारुपुहसमायनःसवाकनायाः

कृष्णपाशः वामास्याः कथानस्वद्वाराः दधनाः गार्ज्जकं कानः मस्त्वलदि मस्त्वः स्वद्वगः गार्ज्जकं कानागुः यशुगनमिहः दधः दधकाधिस समययत ॥ ० ॥ यन गः यंचाधः यंचाद्यः मेशमांसः स्ना काः कृद्काः कृद्स्नानं चिसां यूजा विविथां वजनं चिसां जाय ॥ मकु ॥ कृधस्माथा	दिग्विद्यानाकृष्णः कृष्णकानस्त्वः त्रितः धूयः नानार्जनः गंधलं स्नानः यंचास नः युकाः त्रकचयुनः सधययगलि काः कृद्काः कृद्स्नानं चिसां यूजा विविथां वजनं चिसां जाय ॥ मकु ॥ कृधस्माथा
--	--

दि ॥ यश्च यहालयूजा ॥ लाभाः द्यः सु ॥ यन किलनगायः सिदिगासी ॥ ॥ उं जसाकवादी नसबदृष्टायदासगमयत्रिवागानकी ॥ यश्च ॥ १ ॥ उं विद्याककादिसर्वदृ रुठ द्यद्यद्याट्यादि ॥ २ ॥ १ ॥ यत्रिवागानकीनयहं रुठ द्यद्यद्याट्यादि ॥ यश्चिसा ॥ ३ ॥ उं यनसानककादिसर्वदृ	लयहं रुठ ॥ उं द्यद्यद्याट्यादि ॥ कानकृष्णमासयत्रिवागानकीलयहं उं युहानककादिसर्वदृष्टानवगुप्तस ॥ ३ ॥ उं यनसानककादिसर्वदृ
---	--

शान्नुमासयलिवानकीलयहंरुट्टयद्यद्याटश्यादि॥४॥ दिसर्वदृष्टान्नुमासयलिवानकी मि॥ ५ ॥३॥ककिनाककादिसः लयहंरुट्टयद्यद्याटश्यादि॥ सर्वदृष्टान्वायसंयनिवानकीलयहंरुट्टयद्यद्याटश्यादि॥५॥वायव॥ ६ ॥	लयहंरुट्टयद्यद्याटश्यादि॥५॥ दृष्टान्नुमासयलिवानकी नमा॥ ३ ॥३॥निलदधुकोदि ॥५॥वायव॥ ६ ॥
---	---

३॥सप्तवलादिसर्वदृष्टान्नुमासंयनिवानकीलयहंरुट्टयद्यद्याटश्यादि॥ ४॥५॥६ ॥३॥उष्ट्रीवचकवनि नकीनयहंरुट्टयद्यद्याटश्यादि॥ यैलिर्वदृष्टान्नुयिदवनासंयलिव दि॥५॥७॥१० ॥थनकिनयजाव्यादियजाःययःयूयःदिवःरुजादिवनिदय	मादिसर्वदृष्टान्नुमासंयलिवाला ७॥८ ॥३॥जृष्टसंरुजाजादिसं नकीलयहंरुट्टयद्यद्याटश्या दि॥५॥७॥१० ॥थनकिनयजाव्यादियजाःययःयूयःदिवःरुजादिवनिदय
---	--

॥ माहा निरुय ॥ मल जागर्थ ॥ कलशः सर्गः मरुथारिः यूजा धूप निना ऊन ॥ यजन
 दडा यूजाः धूप निना ऊन ॥ मधुलसं
 थनलि जाग कर्म दूज दवर्त्य लख
 लइजसा विसखरावना ॥ गगानि
 वार्यः यूजा कर्म मः येरा रुवज धाहु मधुल निखाय ॥ ॥ निखन्नदवरा प्रुय

यूजाः मरुजागर्थः यथाधमस ॥
 संदय ॥ आवाक संमखरावना ॥ ॥ ये
 धन धर्म धाहु वजसत्वादं कानवाना
 ॥ निखन्नदवरा प्रुय

रुय ॥ ॥ नदन सिखन ॥ दवरा दूजान ॥ रावना यरुय ॥ ॥ गगन वसर्वगथागना
 संगद नूर्यः सर्ववा द्विसल संगनूर्यः मा
 लाकः पाक धादिकंदलाः यूयादियू
 मजरि कूसमा ऊरलि रिः यधग विग
 नमिग ॥ नमा मिखावर्कः ऊरु वंदाः य निरु कूसमा ऊरलि नाथदाः सायल्य ॥ ॥ थन

मुलयेः यनिवर्गः मधुलाधिय निमा
 का ॥ ॥ खानदडासर्वदात्र ॥ गग
 दगाडं सर्वगथागकः सनलिग विलास
 ॥ निखन्नदवरा प्रुय

खानयासनदानः स्वयसाडन ॥ रुगवान् श्री जूम्कसद्वजविशाना ऊं नमस्तु नः कठुमि
 शुभितेनार्थं युगिच्छ कनूत्तमार्कः मिः
 वत्तुत्तरकस्य मरुगवानः यसादक
 नसंयुतिरिच्छिगा ॥ मायादयो यथा कम्
 नर्तनार्थं तुल्यपूषादिकां मान् ॥ गृहान जूम्कस्य आयः वाधिसत्त्वयवृद्धयत् ॥ सम

न्वादनपुमावृद्धाः ऊगदर्थकित्याथदा ॥ रुत्रसावाधिसत्त्वावः याना न्यामकदेवताः देवता
 लाकयालाश्रुः तुगासंवाधिसासिनाः ॥
 व ४ जूम्कादं माहावकीः युगिच्छाविधि
 कुयवात्रग ४ जूम्कं यामयादायः समि
 मानिष्यं कर्तुं महर्था ॥ धन ३ ॥ ॥ जूम्कमरु लंकाः सरु लंकी विनं वमः समयस

विवृद्धानां रुविशदं न समायः श्रुवेव हारु विद्यामिः वा विविरे कथं न स ॥ गथा गग कूला त्यरिः समाध्यात संभयः अग्रमदि रुवद्यु सर्ववृद्धं निमकु धातु ॥ तता द्रु ॥ वडां कूमादिः नाकुक ॥ याथादि नि ॥ यंच मयः यंचा मयः यंचा मयः कूसरं वः आदि सनान यस्वक ॥ उत्तम कूलं स कन सर्व यति कूडु विकलानय ५६	सकयः उत्तम सकय नरुनः सनियानाः वीजानां कूमादिः कूलात्तन दवता नाकन ॥ उत्तम वंदा ॥ विंय पुवा मयस
--	---

दिगं नगस्यः वृद्धस्यः दाद्वत्र दिगस्य विवृद्ध वाये ॥ यल्लुङ्ग संगान् चिलस्य विहात्मकस्य ॥ गम इलं रुवकु गयना रिष्वक ॥ थन नारि यु यायक ॥ उत्तम कूलं सकल नावायुन य स्यः लोक ययं यति दिगस्य नीलात्मकस्य दिङ्गा गमायुन सादि ॥ थन पूया कवसु ॥ यिवा विव ॥ वाधं गद गवसु खासा ॥ नद विव्या	दनयाय ॥ सुसि वायु ॥ हानं लान जितस्यः धत्त संगन कथिगस्य निवृत्ता गल्लुङ्ग रुवकु गयना रिष्वक ॥ उत्तम
---	--

ॐ आ दि वा वा स स्या स्वा हा ॥ माः आ साः ॐ वाः हू वाः स्वा माः उ ग म त्रू सि आ दि दा हा न य ॥ ॐ य
 दि ॥ कं दा त्र उ म दा लः ग य सि ध त्रः ग म
 ॥ ग व ला च न न नि च क ॥ ॐ आः व ऊ ति
 यः मु नि ॥ व ऊं वं म दान ॥ म ना रुः
 वः वि ऊ ना मः का यः वा कः वि णु थिय क ॥ ॐः सा उ स ॥ आः क थ सः स्रू थ ॥ हूः न ग व उ स ॥ श्री

मि स्वा नि थ स ॥ ॐः क स य ग स नि थ ॥ र्वः क्रा स ॥ गं क्रा मु सः क या ज्ञा दिः स्वंः स क रि नं सः
 ख रु स ॥ द व या क थिय क ॥ थ ग वि ऊ
 म ग म ट क ल र्वाः सूर्य च नु र ना र्वा दि ग
 वि ग क न स थ यू ज्ञा या व क ॥ स्व सि वा क
 क न क ॥ थ न द व या मि स्वा सः च नु सूर्य र ज य ॥ जू ऊ न का या उः थ न क सि न द्रा या व नू

^{३ ३}
 नयः अंजननडा न ॥ रावनायायः मनु ॥ अज्ञानयकलं वलः ययनीकडिनरुवसाकावयन
 जनः यथा लाकस्ये मित्रं ॥ चक्र २ समं
 चिवकं ॥ ६ दिवाचक्रं ॥ ६ धर्मचक्र
न्याः मित्रा निधनं ॥ ६ पुत्राचक्रं ॥
 हानवज्रचक्रं ॥ कृत् २ ६ ३ ॥ हानवज्र अविष्टान ॥ यनसिवायकन ॥ गणः ८ निष

मांसर्वसत्वाश्च ॥ विलाकयकृयासयविम्वसावादयायायः ॥ अक सिंदनविक्रिना ॥ यनं लि जि
 यनिसमं ॥ सत्त्वकृयासयनः कृत् २ ६ ३ ॥ यनः गथअक सिंदः गथगगनस्वसं
 विशागः थर्त्यं ॥ ६ दिवाचक्रं ॥ ६ धर्मचक्र
 सर्वदिष्टाकथागुवाभसर्वसत्वाः
 लिलसीयायकनः थ ॥ ६ दिवाचक्रं ॥ ६ धर्मचक्र
 विद्यायमात्र ॥ ६ दिवाचक्रं ॥ ६ धर्मचक्र
 निषाकागयः गणः

नवयुवं मयग ॥ दनां लिखिता दवः थडासलिलसं इ विष्काक ॥ ॥ गुरु गिरि इष्टि ॥
 दानविधिः ॥ गथनः डालगगदल ॥ सः थप्रगसं नक ॥ नासियक ॥ ॥ डं ग्रा ॥
 सर्वग थगगधृगमवूयासनहं ॥ हं हं रुदृखाहा ॥ इ इ गानक ॥ ॥ डं ग्रा ॥
 सर्वग थगगविष्का मृग थगगखाहा ॥ ॥ गं थो यस्तत्र यूजा ॥ लाः धं वाद ॥
 मुक्ति ॥ वजावं मदानः मगाक ॥ ॥ गुरु गिरि इष्टि ॥ ॥ थनलिखित ॥

ना ॥ खद्विजायोः दवगाः नामाकनं विरुवा ॥ यदीयार्कमित्रमृचरगड ॥ स्यनाः सर्वा ॥
 कामधुवत्रियरू विरुवा ॥ यनना ॥ गथः खद्विजायोः नामाकनंः सकुनिष्कार्य ॥
 दवगाद्वदययुवं मयगः गथेवसुल ॥ दसंदनद्वार्दिकं कृत्वा ॥ ॥ ग्राकव ॥
 गयथादि नित्राऊन ॥ ॥ डं ग्रा ॥ ॥ खं ॥ हं ॥ थमसुन ॥ यं वा मृगः यं च गधयं ॥
 यगथः कसकनसयन ॥ सनानयाय ॥ थनलि ॥ नसाकविकनः द्वाहालखानं हाय ॥

कसकनस ॥ मनु ॥ उं सर्वगथागत काय विहाय न कं स्वाहा ॥ यमनु नं यंच वल्कलं न ल
 यन ॥ ॥ रुनां लान ॥ यः सख्यं न लव
 तस्य ॥ विषय कस्य ॥ विलावनस्य रुवद
 निकर्तव वाय ॥ कसकनकन ॥ मनु
 यक ॥ उं आ गिलक रुष हा स्वाहा ॥ धननाम सूर्य ॥ उं आः जू मक वडा रुव गथागक रु

यधमीसकर्मवडी ॥ मडा गालनसहि
 स्वस्य ॥ विनामकस्य ॥ गनवा लं रुव युगा
 ॥ उं आ वज्र सख आः ॥ गम लावन कि

१०

रुवख ॥ दवयान् रुव उं संधि संगः वजन ॥ जाययाय ॥ दवयामनु नं ॥ यं चाय दान प्रजा ॥ ला
 स्याद्यं वा मनु गि ॥ ॥ ॐ गिनामक
 माय ॥ न लिखात्र आ दित ॥ समनस ॥ म्वा
 स्य ॥ यूय निगा ऊं रुव गालन ॥ यी व ड यक
 स्य ॥ अमा य सिद्ध ॥ यन गालं हि न कनं यन मार्य सिद्ध ॥ गन रु लं रुव युगा कि क लं ग वाय ॥ धन का

लम विधि ॥ ॥ यन ॥ रु ल या स न
 वः यक वान दक ॥ द्राया ॥ खान रु रु न ग
 वमयक ॥ सवज या नि म रु नि नाय ॥ सहित

द्रव्यविषयोऽं दिव्यवासखादाऽं वाधं गइरु कवकुखादाः ॥ लाहाग्निनकाः संखलवन
 हास्यः सिधितिनिः अविद्या नयाया दिग
 साद्वजदकाकयः संखनवनहायः ॥ न
 यीननखादाऽं उं खादाः ॥ ध्वनमुति
 लास्याः घं ० वादनकुति ॥ ॥ ॥ निरुलयासनविधिः ॥ ॥ यनः अर्नयासनयायः ॥ खान

११

द्रव्यविषयोऽं दिव्यवासखादाऽं वाधं गइरु कवकुखादाः ॥ लाहाग्निनकाः संखलवन
 हास्यः सिधितिनिः अविद्या नयाया दिग
 साद्वजदकाकयः संखनवनहायः ॥ न
 यीननखादाऽं उं खादाः ॥ ध्वनमुति
 लास्याः घं ० वादनकुति ॥ ॥ ॥ निरुलयासनविधिः ॥ ॥ यनः अर्नयासनयायः ॥ खान

यीषनेखादा ॥ नकमकु ॥ उंयाधायखादा ॥ चिकिधंयचिनःयात्र ॥ उंजुयानायखादाचिवां
 उंसमानायखादा ॥ दथुना ॥ उंमजाना
 ना ॥ उंदिवाधनयिनहाखादा ॥ सक
 वकनखशुय ॥ उंजुचमनंयुगिद्वखा
 चिचक ॥ ग्वयग्वावविया ॥ ॥ थनःकथखयाय ॥ चनामधिदादात्रया ॥ काइयागत्रद ॥ यथा

यखादा ॥ वावा ॥ उंवानायखादा ॥ का
 नांकायावगडायनकनक ॥ नासिचक ॥ १२
 सा ॥ थनःनखाकखानमावानः ॥ माउसः

दियजाःलाःधंःशुनि ॥ ॥ शनिजूनयामनविधि ॥ ॥ थनलिडापीतयन ॥ धजःवाऊन
 ॥ थनडयनयवाकियायाय ॥ रावना ॥ ध
 दाःसत्रकलंमदमिति ॥ न्यस्यसर्वदः
 ॥ थनःकाऊमानसाऊत्रयाडाधान ॥ म
 ॥ सर्वसुखमनायायिःसर्वसुखददित्ति ॥ न ॥ सर्वसुखयिनाचैवःकामाग्यसमयागिर्मायन

वनाहृत्रदःउंससासुखःमदावजहुव
 वनागथागतप्रमिरुत्रमसंकात्रयनूः
 सासुखंमदागागःगिर्वंसर्वजगत्याकि

नमो ॥ इत्युक्तं कृतं नमो ॥ मातुः स्वस्ति कथाया ॥ जंजल नंद ॥ लाना नाना सुवर्ण आरुव न
 विय ॥ उंका नमय श्रीवृद्धमकूटं नि
 नमस्तु नमो ॥ यथा कंयुं नानाथये म
 जामनिमै निमसामकूटयुगीरुत्वा
 ॥ वाकुरु निगय ॥ उं वज्रधनस्य निशूरे विचरं ॥ यथायदा नयूजाः लास्याः च

१४

वाः सुगि ॥ ॥ नित्यं नित्यं कथय विधि ॥ ॥ थयानि अः पुगाय म ॥ लावना ॥ स्व
 इति दवनाः स्वद्वीज विज्ञानिषा ॥
 नः स्वद्वीज सं ह नमस्तु ॥ न किं राव
 नदव अविष्टान ॥ थन ऊऊ मानदा
 नात्र दामरु सं ॥ अराधय प्रवधर्म ॥ विज्ञान वयु कीरिणा ॥ सर्वार्थं च क्रिया नित्यः क

रुवाकैसदाशुवि॥यनयनदिरावनःवृद्धलंसमयागः॥आखाविह्वयय॥थानिगु
 तियाज्जथसियावःयनदमदन्त्य॥मकु
 सधिवी॥मंडमस्वला॥डिवज्जलनः
 विय॥यंवायुदानयकाःलाःद्यंवाः
 मविधिः॥॥थनदभगर्नलिदावयाव॥यथादिरिमधुलंकुलाःसंयुक्तमसु

॥डंवज्जर्म॥॥कनाविय॥डंवज्ज
 जां॥डिभलदन्त्याविय॥संम्वलःमिया
 सुमि॥मधुनधिरकं॥॥मिवुगादः

१५

तथिलगामथा॥डंसर्वकथगताःन्यमिमादिदवताःनिखराववाधिविरुचनूयानूः
 विह्वय॥वाधिविंताहुवासर्वःवृद्धाः
 स्वकृमिषाष्टकुमानि॥निखरावन्
 गालानःवाधिविरुमिगिरुगः॥
 न॥थनलीःवाक्यका॥लाग्नाद्यंवावादनगुमि॥॥॥दियायविंदगसाःदडात्रस्ययव

शास्त्रगामगः॥वाधिसखासदासखाः
 बालंवंःसर्वसलककात्रनं॥गथगासम
 दवर्त्तविदाविज्ञाक॥मधुलविसज्ज

नायनखयः थडाग्रथसमगयः धननदनकः लाहागिननका वज्रगानवा मगरुं नगाय
 सिरुतं नयः विसर्जन ॥ ॐ गिसमाव
 दत्तगात्राधिवाशनः दूगल्लक्रियाथ
 इष्टि ॥ धनमधुलथिलः कुगिनम
 ययुजाः दक्रनायुजाः ॐ हियादायनीकः किशुनिसमाः दक्रनाकायः ॥ दगुत्रिस

र्जनविधिः ॥ ॥ यन्तु (अकूकूया
 लागाः मगरुठिकाः कायदवयाः क
 गात्रु विसर्जनः सर्वाः महनिष्ठयः वि

१३

मयः जायुगसमयः लदियकः विसर्जनः समयावकः गमयकः कवदवस्थयः भाकसिवि
 यः वावत्रिधयमरुडा ॥ ॐ निज्जिवि
 जाचार्यलः सनानयाया ॥ समरुथाव
 लक्ष्मीः यदयक्रितीः यिनयः कायः ज
 यः गुवूमधुलः यैके गवयस्वधनः सिधुनः मधुलविसर्जनः विसमादिः महनिष्ठयः ॐ सगः

मनविधिः ॥ ॐ ॥ सगिकूकूकूया
 नायायः ऊरुः कुंठाः सखनः नागायः श्रीः
 यनिकायः वल्लयः थससगयः सचा

गंमकः अया ॐ यिनायः श्रीलक्ष्मीः यक्रयक्रितियूजाः धनः अग्निहोत्रः अग्निहोत्रः ॥ अथर्ववेदः
 काङ्गादवेयूजाः दवगाङ्गीवियः ॥ मधु
 ॥ ह्रिदियायाया खवेनो खेदचन्द्र
 मन्त्रान्निकान्नयननिष्ठायाः खेददयाद
 र्धयमवद्यासननिष्ठायाः देवकसुखे आः वजनः माउसथियक गायायादि ॥ निर्गर्जन
 १ ह्रियायेदगसाः त्रस्ययाधेननदनके यवगवावियः वक्रगात्रवा सतदनः नायस्या ततस्य खवेनो ॥

॥ लाहानिब्रका माउस अइवालन ॥ माः कंचभनाः लाहा मासकः साहयः सकानयित्र ॥ मा
सकयक धननउ हाथयूजाः मृदुलनः
लुमिहिनक उसर्वगथागतकायविष्णु
यः कात्रविकनवूयक धनः पंथवल्क
या ऊदऊना खः वलमा लसंगी खः यनू खयूयदीयः विचिगाले यूजा हिले पुकि समं वि

मलयगीर्गः गङ्गागलंरुवंकुंयत्रमारिषकः॥सिंधूनयतासिवियः॥दिगतायाडावियः॥नुला
 लतदः॥डिगदालःकुंक्रमःकवून॥नयाव
 हा॥॥रिदवसुवियः॥डेंसर्वारुल
 ००दंगुसर्ववद्वानां॥धुक्कंनमरुगं
 यंचकुलाहुवंगडेंवजसुखकं॥मादकिनिगयः॥यिदीयायधिंदनसाः॥मस्वात्रगयः॥डें

मसलयनयाय॥डेंआदिवयासुखाः
 मरुवहासादा॥नानाजूरुवववियः॥
 गसिंधुय॥यूषाकंयूजमथयः॥मयू
 मसुवात्रगयः॥डें

१८

आः॥वाउहासुवद्वारिंजगानरुजनः॥सुगुणन्दिमालावलं॥विनीखल्वरुदुखादा॥मयः
 रिन्दकानकास्वायक॥॥लाहागिन
 नावधन॥वाल्सस्वानन॥रावना॥मं
 वयन॥गगः॥खरुदरुः॥वीजाक्रमनाना
 गत्याः॥गमादाकृष्यः॥शीरुलंलीनं॥विचिकयत्॥यायादिः॥निगार्जन॥यंचपहात्रयूजा॥लाद्यं

का॥वाल्ः॥कुलात्रयनः॥खनः॥विद्यामस
 न्यमाकवृमर्हिनः॥वाधिविरुखत्रयंरु
 लाकधुसुलित्वाः॥जुकानिषुसुवनंः
 यायादिः॥निगार्जन॥यंचपहात्रयूजा॥लाद्यं

वाः सुति ॥ गदाः ऊलालयनः व्यालः लाहागसगस्यः विय ॥ **मथ** ॥ वूय नाथगन मडाः
 हाना लाकयराकरी गदी लाया मिना
 नः युलायाया लमुलः गनसखनमना
 गरुविकाः सनादसगया डे सर्ववृद्ध
 वृद्ध रूढ लादा ॥ **थनः मिममुलडयके ॥ मनीमिनगाय ॥ डेवऊदागसमयमनस्सलखा**

पाणिः वृद्ध कृपु वरुणाः यनसखसख
 थः कामाखं यत्रियूय ॥ ० ॥ **दवया**
 वृजामिमहावका श्रीषवच्यगिष्टुनि
 वृद्ध रूढ लादा ॥ **थनः मिममुलडयके ॥ मनीमिनगाय ॥ डेवऊदागसमयमनस्सलखा**

१९

दा ॥ **जायदासानगाय ॥ ऊलेममुलडायके ॥ मनीमिनगाय ॥ डेवऊदागसमयमनस्सलखा**
 लाहागसगस्यः विय ॥ **मथ** ॥ वूय नाथगन मडाः
 हाना लाकयराकरी गदी लाया मिना
 नः युलायाया लमुलः गनसखनमना
 गरुविकाः सनादसगया डे सर्ववृद्ध
 वृद्ध रूढ लादा ॥ **थनः मिममुलडयके ॥ मनीमिनगाय ॥ डेवऊदागसमयमनस्सलखा**

यः सग्वन वियः सिद्धनं नूय ॥ दुहि लंख
 वूय नाथगन मडाः
 हाना लाकयराकरी गदी लाया मिना
 नः युलायाया लमुलः गनसखनमना
 गरुविकाः सनादसगया डे सर्ववृद्ध
 वृद्ध रूढ लादा ॥ **थनः मिममुलडयके ॥ मनीमिनगाय ॥ डेवऊदागसमयमनस्सलखा**

वाक्कयूनदादं व॥ थडात्रथासुगमयः व्यात्रकाभायः संखत्रखरुदुत्रुतय॥ विद्यनरुनैत॥
 वादानरुय॥ नूनायकः दवस्वः च
 माधियीनेहाखादा॥ यथावहालयु
 गुद्वविधि॥ ॥ यथावहालयु
 मयनिमादृष्टा॥ याथादि॥ निमादृष्टा॥ ॐ का क का मयखादा॥ ॥ आद्रुतिविद्याय

लकाश्रया॥ मकु॥ ॐ दिव्यामध्यानसु
 जाः लाः द्यः वाः मुनि॥ ॥ ॐ निपासि २०
 रावना॥ अनादिसंसिद्धिः वृद्धविंववू
 ॥ आद्रुतिविद्याय

वायदालयुजाः लाः द्यः वाः मुनि॥ गताक्रत्र॥ ॐ निजुमिक्त्रियाविधि॥ ॥ पुनिस्त्र
 वना॥ खरुदीकनक्तित्रर्दलित्वा
 सिद्धिर्यथासुलंदृष्टा॥ आकर्षण॥
 र्मयंथावादनमुनि॥ ॥ ॐ आः
 मय॥ मलुलसद्विकरात्रय॥ ऊऊमानः दाऊत्रयंथान॥ यथयुगमयउया॥ ॐ संवगथ

अकनिष्ठुवतगत्वाः मकु अनादिसं
 याथादि॥ निमार्जन॥ यथादियुजा॥ ल
 र्ववीत्ररु॥ यनमलुलसखात्ररुद्रात्र
 ॥ ॐ संवगथ

गगनयूजायस्थ नानानं निर्यागया मि॥ उं सर्वं गथगगवजसु त्वाश्रुधितिगुमां॥ यद्व॥
 उं सर्वं गथगगः यूजाः युवकनायात्मा॥ नं निर्यागया मि॥ दक्षिण॥ ॥ उं
 सर्वं गथगगवजसु धर्मयुवकयमां॥ यद्वि॥ ॥ उं सर्वं गथगगः यू
 जारिषकायान्मानं निर्यागया मि॥ उं सर्वं गथगगवजसु त्वा रिषिषीमां
 उं सर्वं गथगगः यूजाकर्महायान्मानं निर्यागया मि॥ उं सर्वं गथगगवजसु कूबूषमां॥

२९

उं सर्वं॥ ॥ वृद्धानां मरिषककुडगगयवकिर्मां गुणकत्रः यथादरुः सुथाददध्वं
 मस्यादि॥ ॥ ॥ निमगुलपुवेंगवि
 यगस्थद्वीजसपूषसंजानः गथग
 मायत्रिगंवृष्टाः विशाकत्रगदीरः
 ॥ यनंगलं दिगकलं यत्रसंवविर्गुः पुन्यक्रियाकत्रममार्यकनाहियूकं॥ ॥ ॥

ऊमहः रवावा मृनिः क्षय सिद्धं न न गालं रवकुं वन मारिषक ॥ यथा दिजा उमा पुनखादि ॥ ॐ वजा दकारि वि शुनि ॥ थन क मिदा थय जाः झारु लक्ष नः युगि स्या यायः ऊन मानः यं व स्य न जाय याय ॥ थम कुन ॥ ॐ हं डी ४ वजी रव इड गि डू र्व हं स्वा दा ॥ ॐ ॥ १०४	ॐ हं ॥ यं वा य दा न य जा लाः द्यः वाः यः स्व सि वा य न ॥ ॥ थन जा न य २२ काः स्वा न मा लाः न वा क दा वः स्व न मा
---	--

रथि न हा लः स्था क ॥ ऊन यं व रि मा सि रं ॥ ॐ म नं थ कल्य द्र स द स कं ॥ ॐ कल्य म र्वः नि क उ स वः गु य स्व का रिः द व नो क नः ल का स्वान मा नानं का वा स्यं वि का क ॥ ॐ गी वा यः ॐ ला गो द न ॥ जा व न् म नू रि मा द वा ॥ ॐ नो गी	थिं यु गि र्व यु मा नः या रू नो ॥ ॐ म नं थ ल्य म र्वः दा न रिः कल्य ना या क ॥ ल क या क रु या य ॥ व य्या नो द न न रू मः जु गि ऊ न वा यः थि थि या रं डः जा य क ल या नः थि न या दः वि का य रु न
---	---

॥ सुभजनयवतसः द्रवद्रवया द्रवकयनिसकत्रथित्रयादविक्रागः थलाल्वः द्रवया
 लथित्रयादविक्रायमात्र ॥ यावत्
 त्रयाः लंखयिथिसुदयानि इत्रः थत्रो
 गगनकावटः आकाशमः चद्रमाः सु
 यकाडाविक्रागः थत्राल्वः थित्रयादविक्रायमात्र ॥ तावत्तल्वः विक्रयीरुगावानः सुभजनः
 यनवसः वज्रसल्वः तथगतल्वः थित्रयादविक्रागः थत्रल्वः थित्रयादविक्रायमात्र इना ॥

यथस्मादाहुरुयरावाः लादिशो डंसुयनिथितवज्रखाहाविक्रनथिय ॥ ॐ गिय
 निष्ठाविधि ॥ ॥ याधिवज्रलादि
 नृपिनः स्तनसल्वनकीरुर्गनरुहः
 ॥ नृपवजादि रिनूयमानं सकलतनी
 संरुवः वज्रः गतः खलवंरुनसल्वः नृपिनः यचतथागतः मध्यस्थिर्गः सकर्तः गस्य

तिः नमिसल्ललागया ह्येवयः सधियुष्टवः कथा कर्म ॥ ॥ अरिषकं मदाव
 ऊः उधायुकं नमस्कृतं यथा कंयूज
 चवद्वमदा मकूटपुगीयु स्वादा ॥
 अरिषिचकं ॥ उंसलवकी अरिषि
 धर्मवकी अरिषिचक ॥ उंसलवकी अरिषिचक ॥ मकूटदिवक ॥ ॥ अरिषकं

नाथयः मकूटपुगीयु स्वादा ॥ उंस
 मकूटनवायक ॥ उंसलवकी अरिषिचक ॥
 चक ॥ उंसलवकी अरिषिचक ॥ उंसलवकी अरिषिचक ॥
 मकूटदिवक ॥ ॥ अरिषकं

२३

मदावजः उधायुकं नमस्कृतं यथा कंयूज नाथयः मकूटपुगीयु स्वादा ॥ उंसलवकी अरिषिचक ॥
 रिषिचकं सनगल्लमदं ॥ उंसलवकी अरिषिचक ॥
 रिषकविधि ॥ ॥ वजः ॥ उंसलवकी अरिषिचक ॥
 रिषकगः ॥ उंसलवकी अरिषिचक ॥
 नथियकं वजः विधि ॥ उंसलवकी अरिषिचक ॥

हा ॥ उंसलवकी अरिषिचक ॥
 अः ॥ अरिषिचक ॥
 ससिद्धय ॥ नयकः कंयूजः माउसः थ
 ॥ वजः ॥ उंसलवकी अरिषिचक ॥

श्रुतवज्रसमयस्त्वं वज्रसंघः ॥ १ ॥ अ० ॥ गृहीताग्निमयारुवावन्मायिर्निदिता रुतः ॥ चतुर्विधं
 वयाः नमनः कथाः कथं सः थियका क र व
 जसत्वाः स्त्वं मरिचिथिथिः वज्रनामा लिख
 स्त्वं ॥ यद्वयानामयुय ॥ ०० निनामा लिख
 यत्नका नं कुतः हानलि सदा लिनया विरुवा ॥ जवसदा वज्रः स्ववसतः वनसदा वज्रः स्ववज्रः

नका नं ॥ ०० नि यत्न लिख क ॥ ॥ उं व
 कतः ॥ उं आः ॥ अमक वज्रं तथा कत रुतु वः
 क ॥ ॥ यकिमादिदवतानी सर्ववज्रवज्र

२४

सतय ॥ आत्रिज नया चक ॥ आत्रिजं रावना ॥ उं कत ॥ सयमिष्टिगवज्रस्त्वाहा ॥ लखं क ॥
 जावाया लिख क ॥ ॥ तदनचक शमः
 आवेलाचनादिगथागतश्चंद्रः वेलावन
 यवज्रमाया मश्च क वाधिचिंरुद्रयः
 रुयं ॥ ०० निरुद्र लिख क ॥ ॥ ततस्ततः वज्रसत्त्वमाय विगदव्यः समायनाया य

निवज्रसत्त्वः स्वद्वीज किमस्मानिगः सवि
 दायय विष्णुः दवीरु नं सदा सयं स नर
 यमिमादिदवताया ॥ सत्त्वय विष्णु वि

मितादिदवगायाः सह ज्ञानं च मयत्वं मयि मयत्वं ॥ उसत्वं यमिमादि तद्युर्थः सकलं नूयाः सहस्रं तयः छुन्याता कनूमाहिं नैक यकः ॥ ॥ यथादि यकाहुनि ॥	॥ नित्यं कृत्वा नित्यं कृत्वा ॥ ॥ नदत्तं व यमिमादिदवगाः यदि ह्येते सर्वे सतामन त्र सैंसा मयि संयतः ॥ ॥ नित्यं कृत्वा नित्यं कृत्वा ऊऊ मानदा कल यं चाना ॥ आचार्य नः य मुथास्यः मययत्रया ॥ ॥ आकाशाद्याद विद्वाद्यादनादि नित्यं तयत्रः सदा वक्तु मयस्
--	---

त्वा इच्छास्य वकाय सिद्धि म ॥ सर्वो ह्यमः सादा सिद्धिः सादे श्वर्या विदवगः सर्ववक्तु यगो गजा सिद्धा मयत्र साकनः निदायः माश्वन मरुगाव आदा माता मदाननः ॥ अत्यन्त रुद्रैः सर्वात्मा वाधिसखयु सिद्धि म ॥ स सिद्धवक्तु मदा कथाः दृङ्गा गङ्गायन मम ॥ सर्वसत्त्व मना व्यापीः सर्वसत्त्व हृदि स्थितः ॥ सर्वसत्त्व	आसिः सर्वमागमन मागवः तत्त्वत्र सिद्ध गुह्यवर्मागुः आदिमकक था गग ॥ ससक्त वर्तु ममदा सिद्धिः सादे श्वर्या ग मद्रया
--	---

॥ यथिविः मिः लंखः रुमः गवनसूयवृत्तगयानाकाः सुमनः सुमलवृत्तसः दवसुमस्तुथितिया
 दविष्ठाकनाम ॥ ॥ यावत्सुनृष्टिनाद
 नवद्वयः आकाशमः चतुः शुद्धः दिन
 थितयादविष्ठाकनाम ॥ ॥ चतुर्धा
 धीयथिवीसः मगलः सुमनः दयाडाविष्ठाकनामः थितियादविष्ठाकनाम ॥ ॥

वाः जावगाङ्गाः मदीकल ॥ यथिसः गंगा
 नाकिः दयकावविष्ठाकनामः थलाल ॥ ॥
 गगननकावत्वं विजयीरुव ॥ गवन
 ॥ ॥

युतिरुक्तवर्जखादा ॥ ॥ अयाकचापिर्यादि ॥ कंशुमदसिंखादि ॥ वक्तायालाकयाना
 लादि ॥ ॥ यनमालसाः यिंथुथयः चय
 आगमनरुक्तिरुनसाः यचरधलादाय
 त्रियुजा ॥ ॥ यनसिंथरावना ॥ नि
 मकरुनताय ॥ यचरुकाकानकः विदिइयः काकाकृतियायः सुदनलेय ॥ मनु

कनरुय ॥ यनदगावलिवियः ॥
 क ॥ धावकइरुनमालसा ॥ ॥ दूक्ता
 नाऊनः लादागिनकाः वडः कात्रवा

लथिलः कृष्णवर्तिनः यूर्ध्वदूतिः आभिवादनः सखनतयः दक्षन्मयजाः कलम्भः
 लिखकः कृष्णालियजाश्चयः दग्धुः समयः कृष्णालियजायाः आदिः सः
 यूर्ध्वकंठः लद्विचक ॥ समयाचकः हास्वादूतिः विश्वर्जनः यिनायलि
 नः यदूः यकीनीः श्रीलक्ष्मीज्ञायः क नसः मधुयानाज्ञायः वालिश्चयः
 गद्यचक्रः धूमागमनिः हास्ववलिः भाकसिद्धिः ॥ ॐ निदहाकृयायुनिष्ठाविधानम

२६
 ४
 ४

2668

सान्द्रयुक्तवक्तव्यात् ॥ कवना ॥ कनानियन्नदवका धर्मो मन्त्रवदसत्वाहं कानवान् शयेवधोक्तं कर्मस्व
 गुरुवदध्यासुसुलेनविश्रुत्या ॥ यमिष्टाकारय
 क्रियासायक्या ॥

मि ॥ ॥ धनविद्यावक्तव्यनिष्ठदृष्टि

2668

ASIA ARCHIVES

मुकस्याथोयवाशिविचिरेयवृद्धयन्तुसमंत्वादरंनुमांवृद्धोङ्गचक्रकियाथेदाशरुलगावाधिसत्वाथयाचाग्र
 मकुदवमादेवतालाकयालाधरुकारंवाधि
 चक्रयःशुभकादंमांदावडायकिष्टाविधिसंयुगा
 यामयादायसचिष्टास्यंचनमःशासवेस्यायकि
 सरुलंरुमःशुभमसरुलंदिविर्गचमासमयसर्ववृद्धोना
 मांमिंशागागनागिलगाशासत्वायकश्चिन्व
 शाकविष्टामिङ्गगचुद्धेयथागकुयचालरुशुभकं
 ध्यायांसा निष्टाहनुमदेथेशावाचयउयगाशुभम
 रादिगादंनसंशयशाशुवेवरुविष्टामिवाधिवि

ककचकमःशाकथागककुलात्यकिममायस्यांनसंशयशाशुभामदिवमद्वययसमस्तदनकेलशागनियाना
 यमस्तगःशवेवृद्धनिर्मणनागाहूनदवतांवडा
 दवडवकसाचयायंवाभृकयंचगवायंचगेचेरु
 साहूलैसकलसत्वादिककलस्याःवृद्धस्यादावचदी
 गचंमचरासचयुडिकस्यानिवात्मकस्याधर्मस्याभिनकाथिरुमनिचुक्रवस्याःलाकपयंयविंवितात्मकस्याकला
 विदि

नसाभिवेदयवर्गस्य

॥ स्वादाँ स्वस्ति वाक् यत्तु ॥

[illegible]

ग्वय सिध सिध पावुय दक
लाठय

विथका ज्ञाः माउडा ॥ कंः कृ ॥ आः कया लडा ॥ कंः नुवाउसा ॥ दिंः शमिवाडा ॥ कंः कृ ॥ ग्याडा ॥ उवडासा	विडा न्दलः अधिस्तु न ॥ चैयकवदाथयडा
॥ गंः गालयाक ॥ कंः शककनं ॥ नाकिडा ॥ धकि ॥	याडाः वयाडा नकान ॥ उंउचनववा ॥ अरुनव
॥ ददयामिडा ॥ चउमरु ॥ गाचय ॥ अंउचयववडा	नितीडिनेरुवा ॥ आकावेय ॥ वाऊमुः ॥ यथा लाव
॥ हिमाक गाचया ॥ ॥ अरुनीयक लं वः ॥ अ	॥ सिमिवा ॥ ज्ञाः चक ॥ २ समकच ॥ विधयेनखाडा ॥ दिमि ॥ कनका ॥ वांदि ॥ चदाय ॥ कंः ॥ उवसर्व ॥ मकनकन

॥ श्री धर्मोचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री कनकनमित्रीनिर्णयं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥
 थियकं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥
 सर्वसत्त्ववितां कृपामयशविष्णुना वा दया
 नालदी सर्वदिगलोकभाण्डादिशुचक्रवर्णनं ॥
 या ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥

कथागतधर्ममध्यामनकं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥
 जायते मया ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥
 वता ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥
 दक्षिणा सर्वकाशभाण्डादिशुचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥
 द्वययवद्वयका ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥ श्री सुतचक्रवर्णनं ॥

श्रु कललनं वा क्रुशकधसः स्नान ॥ धननीनमाकचिकनकायावः द्वा ल स्नाननदाया मरु ॥ न्नां सवनेया गक कायाविष्ठा धनः स्वाहा ॥ धनचिर्यं ययत्वा मडाग (धन) सहितस्य द्वियकस्या विवाचनस्य रुव गदयया क्रुशकनक (ध) ॥ न्नां वडस त्व आ शास्त्र चकउवनः स्वाहा ॥ न्नां अभक वडा रुव कथागत रुव द्वा ॥ नाम मरु या मरु उध धिस्त्री दवया ॥ मरु ॥ जायक	लनः स्नान ॥ यः स त्व वल वर धमस कम वडी इह वविना धकस्या कम मरु लं गव मुः ॥ न्नां किवाचं वाचनचिकन ॥ नचका मंण ॥ न्नां आवडनिय नाम मरु या मरु उध धिस्त्री दवया ॥ मरु ॥ जायक
---	---

या मरु दव डगुली मरु ॥ यः ला श्य मरु नि ॥ रु नि ना मा कच ध वृधिः ॥ ॥ धनलिकरु विवचानाय नि क्रुशयकवाय मरु ॥ धनली क्रुशकक्रिया ॥ काद्य सहितस्यः अभयसिद्धिः ॥ रु ल मरु लोदि कवयक ॥ क्रुशक ॥ न्नां दिवावा धमः स्वाहा रुध काया ॥ ॥ धनलीः नाना सिधादका य मरु काना ॥ मरु ध धावस दिगकासी रु डानकया ॥ न्नां आस	स्नाना ॥ धीवडच दव य दस वडया धिसमरु ककरय चमा ये सिद्धिः ॥ रु ल मरु लं गव मुः ॥ न्नां किं न्नां वा धी गइह केव वरु ॥ स्वाहा ॥ नाववा मरु मरु ध धावस दिगकासी रु डानकया ॥ न्नां आस
--	--

सूच्य २ द्वा

मिदालि

३ मनयासन

विमंलाधनी द्वैरुटा ॥ चवननदाय ॥ आगहनश्या ॥ नका ॥ नौ आरसमाधि ॥ लसर्वडी ॥ यययिधुन ॥ यंरखा
दा ॥ ममनस्य ॥ बुदकडोगुलीनका ॥ नौ ऊरखा ॥
नयागधवृषि ॥ ॥ धनलि ॥ खाना ॥ कयाया
नताया ॥ नाना ॥ कच ॥ कलाका ॥ वविया ॥ नौ सवो ॥
स ॥ वडे ॥ कयावः ॥ साडा ॥ दिगमाया ॥ नदा ॥ वव ॥ नौ नाम ॥ सम ॥ वुद्वानौ ॥ डा ॥ का ॥ वव ॥ दश ॥ खा ॥ दा ॥ नौ आ ॥ कौ ॥

गङ्गाधारा यलय ॥ साडा ॥ अधिष्ठान ॥ आगहनश्या ॥ नका ॥ नौ दिश्या ॥ नसमाधि ॥ ध्यानयिधुन ॥ खा ॥ दा ॥ गु ॥ वी ॥ ववि ॥
ई ॥ नका ॥ हा ॥ या ॥ री ॥ ना ॥ सि ॥ च ॥ का ॥ उ ॥ थ्य ॥ ना ॥ का ॥ य ॥ क ॥
य ॥ न्ना ॥ व ॥ विया ॥ धन ॥ क ॥ धृ ॥ वा ॥ य ॥ आ ॥ दु ॥ र्वा ॥ वी ॥ य ॥
मु ॥ कि ॥ गु ॥ कि ॥ अ ॥ न्ना ॥ या ॥ स ॥ न ॥ वृ ॥ षि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
उ ॥ था ॥ य ॥ र्वा ॥ क ॥ या ॥ रा ॥ त ॥ ना ॥ नौ ॥ म ॥ दा ॥ स ॥ व ॥ व ॥ ज ॥ उ ॥ र्वा ॥ व ॥ र ॥ दा ॥ शा ॥ स ॥ व ॥ क ॥ स्त्री ॥ म ॥ र्वा ॥ गु ॥ कि ॥ स ॥ व ॥ क ॥ था ॥ रा ॥ क ॥ ल ॥ ग्नि ॥ रु ॥ ल ॥

लक्ष्मणसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ १ ॥ **ऊष्णमान** हाथ हाड नयन कंठ ॥ मुद्रासंघमदनाग निवसदेवगत्यामि सर्व
 सत्त्वमनोवायी सर्वसत्त्वदिविहः ॥ **सर्वसत्त्व**
 मनार्थ कामास्त्वयि विप्रयत्न ॥ **धर्मधर्म** कथयि
 ॥ कुरु सर्वसिद्धयत्न ॥ धनविमलाभाय ॥ **वि**
 ॥ मधुलविप्रक स्वानमानः ॥ **विमल** कान्तकागुरु ॥ ॥
 विनाचेव कामा ॥ ॥ **समयागी** ॥ सत्त्वानां नन
 हाता ॥ **समय** समवधादयी ॥ **हा** यथाह्यसत्त्वानां
 नदीयुजायाया ऊर्ध्वमा ॥ **उदय** नयविधि ॥
 ॥ **विमल** सत्त्विक यष्टिस्तु विधिसमाक ॥ ॥

२ कि हा न के

॥ **धन** वाग्य ॥ ॥ **तत्त्व** उक्तव नार्थ ॥ **विमल** मादि नृत्तानं कथ्यो ॥ ॥ **धन** लान ॥ **ऊ** लमल क
 मलयाहि सर्वजगि कुरु कार्य धर्मधर्मना
 ॥ **लमल** ल गुरुग ॥ **धन** माशियक ॥
 वक्रमल गानयिवा कुरु नगुहीवा ॥
 मनु ॥ **उ** सर्वसत्त्वगत वप्रहाविश्वधन ॥ **न** इलानावा लान् ॥ **उदय** कुरु स्वाहा ॥ ॥ **विमल** कुरु

ग ॥ कृष्णयन लूमन ॥ ॥ डं तत धर्मो नाथै द्युधिकन हाखाहा एम वल्क सुचिकाया कल्कि
 देन ॥ यनस्तान ॥ यत्तमल अशिमस्य डि ॥ होयुननमक पुनाच वव हाससु साधिन
 पथीव तमकु वडिनस्य निम्यविगल गल ॥ कल राहु रयत्र मा अशिकक ॥ धनलो ६
 हाअनि ननोजन ॥ ॥ किकमनन द्या ॥ वलि लिखित्वा कृत अना सुवल्क निवका ६
 दिनाना रात्र हो ॥ ॥ रुलेक कुमन ४ मा उज नचा जय लूचिनन रचक ॥ नाना वविथ ४ ॥ ६
 न

॥ डं रावो रन रुयन स्वाहा ॥ दया ॥ डं कालनय क वद्धमलित मकट निथाय ॥ ॥ ६० दीग सव व
 दाना ॥ यो धा पुन मकृ र यमा रं यून ना थो ॥ य मटय अ क ला रु व ॥ डं सव वद्ध च जामहि
 महामक टयु गिह स्वाहा ॥ डं वरुन तणी ॥ ॥ मकट शिवा आवाय ॥ मकटन यायक ॥ वज
 आतपत्री मूडा वद्धा ॥ चाक रुही गय ॥ वज ॥ धन श्वरी हूं ॥ ॥ तत ४ यू दिय डा ६
 यष्टा वादन सुति ॥ ॥ ०० ति च उा क न हा विधि ४ ॥ ॥ धनी लिवा वान क्रिया ॥ गता वग दडा ॥ राव

ना । ॥ गताः स्वर्गदिदवता स्वर्गद्विजचिकैर्ज्ञानिषादयः सद्योकाः ॥ १ ॥	॥ देवजसत्त्वर्द्धं ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमः ॥ लक्ष्मीदेवतां कृत्वा नमो सावमागतं	॥ कवयटाः ॥ लिवहा ॥ ऊजा मानदाथः
ज्ञादवचिकयत् ॥ ॥ धर्मकुनदवता अधिष्ठा	॥ लमी ॥ अशावयत्तधर्मवचिक्री सावयकिरी
जायचान ॥ ॐ दर्शः सर्ववद्वोनी हृत्ताकव	
नी सत्वाथ कियानिर्णयं कुरु वसदायु वि ॥ यनयनदि ॥	

॥ धनिगुडिया अर्थसयाव प्रदक्षवर्तन ॥	॥ देवजधर्मजी ॥ अननमकुनस्तिर्गं वृक्षगुरुं कलुदयः
॥ धर्मकुनज्ञानाविय ॥ देवजासन्निव ॥	॥ मूजवर्तन ॥ ॥ वासिममल्लावध ॥ देवजवर्त
॥ ॥ किंशुकदलुदरु दद्यात् ॥ दर्शोदा ॥ ॥	॥ लिवद्धि ॥ मन्त्रात्रिकाय ॥ यः ॥ अयदावयुजा
॥ यत्पावादनमुनिः ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥	॥ वृद्धि ॥ लिहावयाव ॥ ज्ञानयाय ॥ यथादिने
॥ मधुलककृत्वा सयुक्त ॥ ॥ देवसर्वतभा ॥ गान्धुनिदिक ॥ अग्निः स्वराववाधिविरुहः पूयान् विह	

यय ॥ वाधिविरुद्धा, सर्ववर्द्धयुक्ता गणमाणा ॥ वाधिसत्त्वा मरुतसत्त्वाः ॥ स्वजागिष्याश्च जमिनः निख	मासमल्लन, वाधिविरु मिमिषु न ॥ नतावाक
सार्व, निलावर्ध, सर्वसत्त्व ककानर्हाः ॥ नथ	हाममावरुनविधि ॥ ॥ ततः सर्वदेवताधिः १०
यजा, लाह्यादिभिः सयुक्ता ॥ ॥ वरुमाक	॥ स्नानतर्जनः ॥ समस्तमय ॥ गुर्वदकनायुजा, आस
वागनविधि ॥ ॥ धनः ॥ सतर्जदका काय	॥ अथ यन, अहनि यय
वाउ ॥ ॥ ०० ति द्रष्टव्यविधि ॥ ॥ सति कृत्वा यही विधान इति ॥ ॥ अथ यन, अहनि यय	

२ स ७ ल. थि २

२ स नान

यकावसमय, कृत्ताना, सवायकन (हायत) आचार्य ॥ रावित, समाधितय ॥ सूचनायायति मादि ॥	॥ यमनस सयहार्च, आचार्यस्य ॥ ०० नाय
॥ विधि ॥ ० सस्य ॥ रावना ॥ कालय ॥	कलसयुजा ॥ अग्निथायन ॥ क० न ॥ दवताक
अलिनीकायकन ॥ गुर्वमलुलदगुची	खददय, चन्द्रक ॥ का काली विराय ॥
धनहाव ॥ ०० दि क्रिया ॥ रावना ॥ तता ॥	॥ यतिमादिदवता मडा सिक्क कायहा निध्या ॥ खददया, इलुई ॥ यतिमादिदता, वामया (य) यमच

वे १

दासननिषय ॥ डं वरुस त्व आ ॥ ॐ निमकुनननस्य मृद्धि वरुस त्व समय मृदावदा ॥ भा उडा ॥	हामिल लदा एययथ क मालया युनिष्ठ दवता
वरुनथियक ॥ या द्वादि एनिला ३३ न एला	॥ मासकवक लाहामास ॥ मवभूच्छु ल (हान ११
गीवसमात्र चार् ॥ अ इ वा य यन ॥ मास मदन	॥ लशिघाचक ॥ तत ४ डं सवे तथागत काय ३
श्वानयनय ॥ ततसमालानयनयन ॥ ३	॥ लशिघाचक ॥ तत ४ डं सवे तथागत काय ३
विश्वधनखाहा ॥ ॥ ॐ खननसफ ड फ नू सग धनयन दूवाक लुन दयन मययित्वा ३	

२ अलत्र सामन भात्र क यक

॥ म ३ वरुलन विनूदय ३ वीथिस्ति ॥ य ३ मृगनय ३ ग धादिना ३ खाने कालय ३ ॥ ३	कात्रनवायका य ३ वकत्र य ३ मृगनय ३
॥ ख ३ य ३ मृगयचन ॥ क्रमधाय यत्रय ३	माल संगीकनृय यलयाववदीय विवि
३ ग ३ ॥ धत ॥ खान ॥ डद डलासावत्र	यीके ३ म ३ ल ३ व ३ न ३ य ३ म ३ क्रियक ३
॥ ग ३ ३ य ३ डा ३ रि ३ य ३ ति ३ म ३ वि ३ म ३ ल ३ य ३	
॥ व ३ ल ३ वी ३ ड ३ डि ३ त ३ ख ३ न ३ ड ३ ड ३ म ३ क ३ य ३ ॥ ध ३ रि ३ नि ३ या ३ ड ३ ॥ ल ३ य ३ न ३ या ३ य ३ ३ ३ ३ ॥ द ३ वा ३ ग ३ रि ३	

४१ शतमिह कस चाय

३ भाद वि निगय २ कु २ जिंधि द्वाय

पवसु पाडं दिष्टि वास (ह) खादा पा वक्राय पाडं मद्यमिन रु य (ह) खादा पा नाना अमन नवि	
य पा ०० द न सवे वदानी कुभा पु क न म क	मी य म्मा क यजना थय म क ह य क कला
रवि पाडं वज्र स त व द पा रू छि नी न च च क	पा अन न म कु न पा ग न ४ ड अ म्मा ४ वा द श स
व द पिं ग न न व अ न म्म वं ग छि माल व	व वि नि ष क थ द रू द खादा पा श म मि तु
कान का म्मा य क पा ला द मि श नि वा अ न ४ म रु हा वृ य	पा ग न ४ शी रु ल य जा क श स लु पि
मा था पा अ डा व व न गु र्धे व यी न का घृ म उ न रु थ ४ मी रा ड न म क गी यं गी वा जा रु ४ अ म्मा ४ थ मि श	

३

पा वा व चि र्ण पा रा व ना पा शु न्मा क वृ द्वा कि न वा धि चि र्ण स्व वृ य रा व चि द्वा पा ग न ४ ख द द य रु	
वी जा रु व ना ना लो क भा र्गु म्म लि त्वा अ	क नि ष रु व न ग त्वा म्मा द क व ४ शी रु लि ना
अ म य म पा या द पा नि वा अ न यं वा य द	व यू जा पा गु मि पा ग ना रु रु ४ शी रु ल द द वा ४
य श न यी मि नि ४ ला द ग श न वा ४ मि र व ल	वा व ड न ल क था ड चि र्ण स्व उ धि था न न च
य ४ ०० द ना था ग मि मू डा रु न लो क म्मा क लि गृ ही त्वा या हि नी या नि वृ द्ध क य य वृ ह ना य न	

सखन सखन यदुयायासु लं एतनसखनमनार्थ ४ कामाख्यं यविधुनयत् पं सखवद्वचुज
 मनि वडाहीयवले तिष्ठ २६ हृदवाहा ४
 सखखाहा एहासर्नताय ४ एतका ४ अग्नि
 तयता यम २ मिनि एधनमम ७ लहाय ४
 ज्ञान कानन १ सखि कन्नस्य एदवया १ वावाकाविन कनक १ कर्मन हायक एतावचा मत ४

ए अलिनीनताय एडे महासमय मनू ४
 क्रियायुद क्रिष्ण काल लु लदिव धावाया
 क एदेले २२ अत्र यय एनेय हा कानस ७

१३

३ दिव तद्धन

हृदवाहा अग्निनीनताय एयडा ए सखि वाक्क यउय हाय एनचाक १ ए ७०० यता भागति मडा
 दि १ सखि वाक ए अग्निनि २ १ हृदवाहा का
 ऊर्वदा वसुहानस ए वाधावन कृय ए सख
 नसमाधि ध्यान यि ७ नखाहा ए चलजा ४
 एयचाय हावयुजा ४ वाग्मा यग्मा वादन सुनि ए ७०० हियाय ४ याहिगहन विधि ४ ॥

ताय एमत्रा वका कायाव थदा थाशन एया ४
 शाजन काजा ४ चलजा ४ हाय १ एडे दिवा
 यमकु एयुयादिना मयू ४ सुनि ४ कृय ४

७०० ॥

752

[illegible]

यूडा अष्टलाघा ४५ ना द्रव शा वृत्ति
दाव प्रयुक्तिष्याय ४ युक्तिष्यावना ए १८
रुलित्वा अकनिष्ठ उवर्णागत्वा ४ गगस्य
दि निराञ्जन ४ यूद्यादि ए डं खैवी न हं ए

॥ मल्लसद्वयं शान्तं ॥ कनकं शान्तं ॥ अतिवद्वं ॥ अजमानं ॥ द्वाथद्वयं चान् ॥ यश्च यनामया य ॥ ॥ इदं सर्वं तथागतं यद्वयं ना द्वायं शान्तं ॥ ॥ इदं सर्वं सर्वं तथागतं वद्वं शान्तं ॥ ॥ इदं सर्वं नं शान्तं ॥ ॥ इदं सर्वं तथागतं वद्वं शान्तं ॥ ॥ इदं सर्वं	शान्तं शान्तं शान्तं ॥ इदं सर्वं तथागतं वद्वं द्वायं शान्तं ॥ ॥ इदं सर्वं सर्वं तथागतं वद्वं शान्तं ॥ ॥ इदं सर्वं नं शान्तं ॥ ॥ इदं सर्वं तथागतं वद्वं शान्तं ॥ ॥ इदं सर्वं
---	---

आत्मानं निश्चिन्तयामि । उँ सर्वतथागतव
द्वयूजा यस्य नात्मानं निश्चिन्तयामि । उँ
। उँ सर्वतथागतयूजास्ति यकायासा
धर्मा ॥ । उँ सर्वतथागतयूजाय वरुन

यात्मानं त्रिष्टोत्रमिष्टं सर्वतथागतं वज्रधर्ममेव लक्ष्यमां ॥	॥ सर्वतथागतं वज्रधर्ममेव लक्ष्यमां ॥
महायात्मानं त्रिष्टोत्रमिष्टं सर्वतथागतं वज्रधर्ममेव लक्ष्यमां ॥	॥ आचार्येन
यत्तु ॥ ॥ वदन्नामसिद्धकर्म ॥ जगत्	॥ गायत्री वज्रिनी ॥ गुहा कलायथादत्त ॥ १३
थादत्त धर्मसहि ॥ मिगाथा ॥ मन्त्र लस	॥ इत्यनविधि ॥ ॥ सावना ॥ स्वहृदी
जमयुक्तां संजातं तथागतं वादिसत्त्वविद्यादर्वं गगने ॥ गगहा मायुर्विर्गृह्य ॥ स्नानयाय ॥	॥ रदडायात

॥ यत्तु लक्षितकर्म यत्र मयविष्टं यूथ्यक्रिया कवहा माश्रजनासिद्धि ॥ कर्म जगद्दशाव	॥ वनासिद्धि ॥ यथादिजातमातनः ॥
॥ मनिशा कर्मिदं गत्तु लक्षितकर्म यत्र मयविष्टं यूथ्यक्रिया कवहा माश्रजनासिद्धि ॥ कर्म जगद्दशाव	॥ यत्तु लक्षितकर्म यत्र मयविष्टं यूथ्यक्रिया कवहा माश्रजनासिद्धि ॥ कर्म जगद्दशाव
॥ दिष्टा वज्रादकासिद्धि ॥ ॥ यत्तु लक्षितकर्म यत्र मयविष्टं यूथ्यक्रिया कवहा माश्रजनासिद्धि ॥ कर्म जगद्दशाव	॥ यत्तु लक्षितकर्म यत्र मयविष्टं यूथ्यक्रिया कवहा माश्रजनासिद्धि ॥ कर्म जगद्दशाव
॥ दक्षिणरुक्मिणं वज्रयंत्रं कर्म माल	॥ यत्तु लक्षितकर्म यत्र मयविष्टं यूथ्यक्रिया कवहा माश्रजनासिद्धि ॥ कर्म जगद्दशाव
॥ यत्तु लक्षितकर्म यत्र मयविष्टं यूथ्यक्रिया कवहा माश्रजनासिद्धि ॥ कर्म जगद्दशाव	॥ यत्तु लक्षितकर्म यत्र मयविष्टं यूथ्यक्रिया कवहा माश्रजनासिद्धि ॥ कर्म जगद्दशाव

सवट्टेतिष्ठुं सैरुं खाहा ए धात्र १०८ पायधर्मागाथा ए डें सु युगिष्ठिगवज्जखाहा ॥ ०० ॥ युगिष्ठाविधि ॥ ए तत ८ युग्मात्तवा ॥ आवसवज्जत्रवसंरुवंदयीनं ॥ हनसव युगिष्ठि ॥ ३ मानं ॥ नृयवजादिसिनुयमा दि ए प्रसिद्धक ए तना ८ न त स सु व डें १ तत स साव हनसव नृयं य ३ कथागत मधुसिग	धिवज्ज (सतिगाथा ८ यदया १ सावना ॥ ३ नकिशुतनकसू ८ नथागतदवीनि ८ कुरु १ ६ नं मज्ज लगीतिकं सावय कू १ पुर्वव १ यथा र सु नान
--	---

मकटं पदवयामाउग मकटं नयायक ॥ कथन ३ व विवन सवसीरुनकं युयक ए मकु ए डें वज्जभात गलिह अरिषि ३ डें ए डें सव मिअ गां ए डें मवडी अरिषि ३ डें ए डें रिषकं मकावडं खादि ए डें आ ८ वज्ज म गुवाहा ए मकटासिधक ॥ १ ए डें डें गौ डी ३ अ १ अयासिधिक त्वमसि वडें ८ वजासिधक न	वज्जि ३ अरिषि ३ अ १ डें वनवडी अरि डें क मवडी अरिषि ३ अ १ ए मकट १ अ कटासिधि ३ डें सव नना मदी ए डें वज्ज १ सं द व स तं हा य
---	---

॥ इदं न सर्ववृद्धं ह्यंगुलवत्सु सिद्धयः ॥ हनकं नृनिवसि यद्वृद्धददामि ॥ वृद्धन नृमातु कं वृ		॥ वृद्धाधियति स्त्री मरिचिश्च अमि तिष्ठव
मातुलं शिष्यक ॥ वृद्धाशिष्यक ॥ ३ ॥		मया जगवन् मदि सीनिहीता राव ॥ यथा ॥ १०
दसमयस्त्री ॥ वृद्धयश्च अंगुलि तासि		शिष्यमि वृद्धनामाशिष्यक ॥ यदववृद्ध
शिकेये ॥ ४ ॥ ॥ वृद्धसत्त्वस्त्रामरिचि		वृद्धदवया नाम वृद्ध ॥ ५ ॥ ॥ अंगुलीकस्य यागन स्त्रीरुहवस्व ॥ नामाशिष्यक ॥ ७ ॥ ॥ युति

२ वृथ न द अया नृगव क थ क यावः ॥ थियका ३ः स्व अ नं अ न क

आदिगनया चकें

मादिव तासर्व वृद्धयश्च कव कृ ग ह्यन मूडा लिं गिना किनयां विराचा ॥ म न ४ स युति स्थित वृद्ध		कश्च न म किं लि वृद्धसत्त्व ४ स्व द्विज किं
यखाहा ॥ आचार्यशिष्यक ॥ ॥ गदन च		वृद्धविवाचन दान मय विद्या ड विगुर्न म
ननानिगी सविद्यवैराचनादि ४ न थागन		वाधिचिरुयूर्य युतिमादिदवनाया मूय
हासस्व मन युयी वृद्धय मास्त्री ॥ मरुष्ट		यविमकि चि कथ न ॥ गृध्राशिष्यक ॥ ॥ म न ४ स न वृद्धसत्त्व नायनि नदद्या ४ समाय नाय

यतिमादिदवगाथा, सहजानन्दमयत्वं मधियुक्तं पायुह्यहनाशिवक ॥ एतदनन्तव
 कुरु गायत्रियादिन, चक्रार्थसकलवृत्त्या ॥
 महामयमयः शून्यानाकवृत्त्या कलशम
 यथादियुक्तानुति ॥ वक्रः शिववद्वा ॥ यः
 दनादिनिधनः यवः महान्वक्तुः समयसत्वा, वक्रः सत्वायसिद्धाय ॥ सर्वोक्तममम, महामिद्धि ॥

यतिमादिदवगाथादिनसवाभनायवम
 धिम, यत्पाठं गित्चक्रार्थसिद्धक ॥ १८
 मृधार्थयदय ॥ आकाशात्वादचिन्तत्वा

महेश्वर्याधिदवगा, सर्ववक्तो धनावाजासिद्धमयवमाद्वनः निदायगावगथासि, सर्वत्रागा
 नूत्रागानः तत्वनसिद्धमरुगावानमदा
 दिमृक्तमथागतः समन्तुः दसर्वात्मावा
 हे श्वर्यादिमूढ्याः सिद्धिवक्तुः महान्वक्तुः
 सर्वसत्त्वद्विदिष्टि, तः सर्वसत्त्वयिता ॥ श्वर्यामात्रमयापिष्टा, शयनसत्त्वन्संस्तुनयह्यया

त्रात्ममहान्वक्तः श्रुतकशुद्धसर्वाग्र, आ
 धिसत्त्वयसिद्धमपः सर्वोक्तममहामिद्धि, मा
 र्याद्वक्तुः शयनममम, सर्वसत्त्वमनायापि

याथात्ममलुली ननसखनमनार्थ कामाह्वयवियूचयत्तु यय (अथहावयूजासुति पज
 ऊमानं यूजायाचकं ऊथासद्धादक
 ३॥ थितहाव ॥ कमि ऊऊमान गुनू
 यकीक ४ मूखतनयास्य थितहाव ॥ ॥ ॥
 को ॥ वद रुदवता सर्वदुग्नि ऊववायूव हायाव तमू थितादव हायाव तमं ४ मदिगव ॥
 ३॥ तिस्व द्दे ४ यता ययुय

१०

चन्दाकागगहाचथा यावलावती विजयिगव ॥ थथा अथकन एव कल्य गुमत्रु सदासर्व
 दाकालं विज्ञायमान ॥ वद रुदवतासर्व
 यूयथिथि आकाश ॥ थयच लुतमान वद
 लं थितयादं विज्ञाकता ४ थिथि विमह
 विज्ञादाव दिन त्राणी दयकं विज्ञाता ल ॥ थियं विज्ञाक थरुन ॥ ॥
 ॥ अथासचयादि ४ वद

लुदवना सर्वकृत्तुर्धं युक्ति मां कैचिन्कृत्तु दानयत्नं ॥ शान्ति यूर्ध्वं स्वस्ति ॥ सर्वगतवत्तु ॥
 ॥ धनदंशविविधं मानसा यश्च ध्याना ॥ दायकं ॥ आगमदवश्रवसा ॥ शान्ति यावदय ॥
 कमात्र ॥ ॥ उडमलश्रवसा ॥ मृगचोदं ॥ ॥ ॥
 मन ॥ डाडकाग्नि ॥ आकृतिविधय ॥ मलुल ॥
 नादव ॥ सयनत ॥ ॥ दहनारूडा ॥ कृशासिधक ॥ ॥ सवाद ॥ सवादकृति ॥ दशबलि द्वाय ॥ ॥

२०

॥ जिवथाश्रवसा ॥ कृमानी समय आकृश ॥ कृशलाय ॥ विमदन याचक ॥ यहुधय मरुवश ॥
 ॥ ॥ लूनिदशकिया विधि समाक ॥ ॥

ह्येनमावृद्धाय शास्त्रं कर्तुं शीघ्रं संगृह्यत ॥ ०० ॥ दानिनिहाय यतिस्तु ॥ नशा तव निश्चयनिविहारी ॥ यय
 कर्मकृता शुभानाम् नृणां शिला दवादिना ॥ नारिकेलीय ॥ विचित्रं मल्लुयम् ॥ यमनाली ॥
 यामय ॥ विजयवलिकिनी विविकानि च न ॥ नयत् ॥ ॥ श्वगाथान् नृणां यान् च यय
 चमूकान् कायलसया उचिया नयाय ॥ व ॥ नंगतह्व ॥ यिलाकह्व यतह्व ॥ रायखान
 दाहल रुग्णय ॥ धूमि कागं विद्या नृणां यय ॥ यचमूक ॥ कुमाजीशूक ॥ धूमिनद्वयक ॥ यामाद
 १४३४

॥ धनगृह सावना ॥ गुरु १६ स्वरावहृदा मवेधमा १४ स्वरावहृदा १॥ आकाशा यत्र मच्चिराद्य १॥ यं
 कालहावायु मलु ली १॥ कालनामिमलु ली १॥ कालनामिमलु ली १॥ कालनामिमलु ली १॥
 नमः स्वरावहृदा मवेधमा १४ स्वरावहृदा १॥ कालनामिमलु ली १॥ कालनामिमलु ली १॥
 ॥ गुरुयत्रिहं कायहा विम्ववजमयिगुमिह
 कायाविम्विहं वेलाचननूयात्यविम्वमन कूटाकायं विम्व ॥ ॥ धन किं नाराय ॥ मरु ॥ १॥

२२

॥ ६ घघ घाटय १ सवदुस्मान् ६ १ रुट ॥ ६ कीलय १ सवयायान ६ ६ रुट ॥ ६ वजमनल
 ६ वरु किलय वरुधनप्राह १ ययति १
 ॥ धनधूयथाय ॥ निनाअन वरुतान
 द्वावशधूयथावधियाव ताया ॥ शुद्ध
 कामनं नय ॥ य १३ मश्री यं वामुन १४ कूटाकायं विम्व ॥ ६ रुट ॥ ६ वजमनल
 वावयदाव मासकवक साधाय ॥ शुद्ध
 कामनं नय ॥ य १३ मश्री यं वामुन १४ कूटाकायं विम्व ॥ ६ रुट ॥ ६ वजमनल

वरक ॥ खानमालानकाहेखायक ॥ ॥ य (वेभयदावयुजा लाज्जमयपुवादानरुति मरु ॥ ॥
 ॥ धन व्यावयुजा चचक ॥ शिधुशुय ॥ मा ॥ दकिनी चाकुरुमि जतगुदका उदया
 म्मकागुरुका मावशना ॥ ॥ धनवादा ॥ वनचय ॥ निनात्र नकिमिस यचयुवका २३
 नचस वका ॥ जाय मरु ॥ जाककानि सा ॥ वना ॥ ॥ यचायदान ला घ दा गु मरु
 ॥ शुक्रमिविय ॥ सुवायाटनचय थियक कान खमिगिचय्या लिचावयदहनवदाव युति

छायाया ॥ ॥ जिवथागुरुसा ॥ मरु खान यचाशिवक मरुट रुनिम वजघना नाम ॥ यला
 य पु मरु ॥ धनयतिष्टामकदि ॥ डं डं ॥ ॥ यतिमरु म्मत्र ॥ हनस लमाशुय ॥ धन
 जा ॥ धन यधमागा था यउय सुरुनलय ॥ ॥ यतिमिष्ठित वजसादा ॥ वजनथिय सु
 धिधानयाय ॥ चल जाशुय ॥ धनय पुनय जसिमाचा द्वाय थय ज्ञान ॥ सानि वलिविय ॥ रु

[illegible]

रथ नष्टे दानया ॥ क ॥ गुरु धन ॥ गुरु सिसु मांस दसुखा गम्य विला कयः
कृया मय ॥ हय मय ॥ गुरु नवा मय ॥ हयि डय रति नमि मय ॥ गुरु
समस्त सत्यया ॥ मिसकः ॥ क ॥ नमय
विहय साला दया मय ॥ हय ॥ मिसकः ॥ सिदुन
नग थय साय ॥ सिदुन ॥ थय गन ॥ क ॥ नमय नसा ॥ थय ॥ मिसकः ॥ यय ॥ हयि न ॥ व

नृणां वगः सास्यं विज्ञाद न ॥ ॥ त्वार्यं विनिगनः तस्मिन् न हि सुसद्वादिगत्वा
 कथं गुह्यं न ॥ द्रुयस्य ध्वजं नृणां
 गत्वा तस्मिन् यागं नृणां दिदिगः यद्व
 यं नृणां नृणां नृणां ॥ नृणां नृणां
 सिंहाया के कनूना दृष्टिं न याडा सास्यं विज्ञायमात्र ॥ ॥ सत्यसत्या ४ दिद्ये

५

चक्र विनिथाङ्कगनः तस्मिन् वयवजयग ॥ द्रुयस्य ध्वजं नृणां
 ध्वजं नृणां याडा सास्यं विज्ञात ॥ ध्वजं नृणां नृणां नृणां
 ध्वजं नृणां नृणां नृणां ॥ नृणां नृणां नृणां
 ध्वजं नृणां नृणां नृणां ॥ नृणां नृणां नृणां

सकलैरुकासद्याय॥ काहु १०८ कुडासः यानूः चिः चाकूः मिकुसिः दूगुडाः सवे
नहाः सलायहाः ग्वचः आकनः गायः थानिद्यायइजा॥

६

दिगयगा दसचगा

य चित्त ज्ञः स्याम

द निर र चित्त

य खग

उ चित्त

अ प्रका

ने स्याम

वी प्रका

हं खग

2668

ASIA ARCHIVES

